IJAER/March-April 2015/Volume -4/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

यशपाल और नरेश मेहता" के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ लोकेश कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर , राजकीय महाविद्यालय

टोंक, राजस्थान

सार

अपने जीवन के पचास साल की लंबी अवधि में यशपाल नै उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, निर्बंध यात्रा विवरण आदि साहित्य की विविध विधाओं में सहजता से अपनी लेखनी चलायी । पढाई के साथ-साथ राजनीतिक पढाई मी इन्ही ने अपनी मैट्रिक की सन् १९२२ में चौरीचौरा में जनता और पुलिस के बीच दिनों शुभ की । भयानक संघर्ष हुआ । श्री नरेश मेहता हिंदी साहित्य में प्रतिभाशाली रचनाकार के रूप में सर्वविदित हैं। वे मूलतः कवि प्रकृति के व्यक्ति थे। हिंदी साहित्य में कवि नरेश मेहता बहुत प्रसिद्ध हुए हैं; किंतु उनके गद्य साहित्य में अपने समय के समाज और परिस्थिति का विस्तार से वर्णन द्रष्टिगोचर होता है। स्वातंत्र्योत्तर गद्य साहित्यकारों में नरेश मेहता अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। लेखक ने गद्य रचनाओं के द्वारा मानव जीवन की उपलब्धियों, संघर्षपूर्ण जीवन तथा उसके उत्थान - पतन को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर घटनाओं का चित्रण परिलक्षित होता है। नरेश मेहता के गद्य साहित्य में आस्था के दर्शन होते हैं। उनके द्वारा रचित उपन्यास, कहानी, नाटक एवं एकांकी, निबंध और यात्रावर्णन में यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने मानव जीवन में मूल्यों को अधिक महत्व दिया है और उसकी रक्षा के लिए उन्होंने परिस्थिति के अनुसार अपने आप को परिवर्तित किया है।

मूलशब्द: *यशपाल, नरेश मेहता*

प्रस्तावना

यशपाल का व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन उन साहित्यकारों में से है जिनका साहित्यिक व्यक्तित्व उनके इतर जीवन एवं व्यक्तित्व से पृथक् करके नहीं देखा जा सकता है। चूंकि ३५-४० वर्षों के अपने जीवन में यशपाल लेखन को औजार की तरह इस्तेमाल करते रहे। मुंशी प्रेमचंद के पश्चात् यथार्थवादी परम्परा को यशपाल ने ग्रहण किया, लेकिन प्रेमचंद से भिन्न पाठक का विवेक एवं बुद्धि को सचेष्ट करने के नजरिए को केन्द्रित करके । यशपाल का जीवन कई संक्रमण बिन्दुओं से गुजरता हुआ अंत में मार्क्सवादी विचारधारा की पुख्ता जमीन पर जा टिकता है। उनके व्यक्तित्व से अवगत होने के लिए उनके साहित्य का अनुशीलन ही यथेष्ट है। चूंकि जन्म, पारिवारिक वातावरण, शिक्षा, परिस्थितियाँ और सम्पर्क व्यक्ति के जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। क्योंकि महापुरूष, महान् नेता, महान् लेखक और सुधारकों आदि की जीवनियाँ इसी तरह की घटनाओं और परिस्थितियों से परिपूर्ण होती हैं। इसलिए उनके महत्वपूर्ण योग को किसी भी कारण से नजरअंदाज नहीं समझा जा सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में हम यशपाल का व्यक्तित्व, जीवन और कृतित्व के संबंध में चर्चा करेंगे।

यशपाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

यशपाल हिन्दी-साहित्य के ऐसे मूर्धन्य लेखकों में से एक हैं, जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही विवाद के घेरे में रहे हैं। स्वयं यशपाल अपने आत्मसंस्मरण 'सिंहावलोकन' में अपने एवं मित्रों के संबंध में जिस तरीके से लिखा है, कि वह एक सीमा तक तथ्यपरक होते हुए भी उनके आत्ममंथन होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। चूंकि व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं- (१) आन्तरिक संरचना

और उसके अनुरूप आचार-व्यवहार, विचार, बुद्धि एवं विवेक आदि। (२) बाह्य रूपाकार, जिसका संबंध वेशभूषा और शारीरिक बनावट या संघटना से है। ऐसी स्थिति में यशपाल के रचनाकार व्यक्तित्व के निर्माण का वस्तुपरक चित्रांकन करना यदि असम्भव नहीं तो यत्न साध्य कार्य जरूर है। ऐसे संवेदनशील काम के लिए चेष्टा की गई है कि अधिक से अधिक अनुसंधान स्रोतों, पुस्तकों और विविध जानकारी तथा यशपाल की रचनाओं के अध्ययन से उनके जीवन एवं व्यक्तित्व का चित्र यथार्थपरक खींचा जाए, जो अत्यधिक वस्तुपरक हो सके। "यशपाल का जन्म ३ दिसम्बर, १९०३ को पंजाब के फिरोजपुर नामक स्थान पर हुआ, जहाँ पर उनकी माँ श्रीमती प्रेम देवी आर्य समाज के स्कूल में अध्यापिका थीं। यशपाल के पिता श्री हीरालाल का पैतृक स्थान हिमाचल प्रदेश में काँगड़ा नामक स्थान था। हिमाचल प्रदेश में यशपाल प्रायः नहीं के बराबर ही रहे, फिर भी वे स्वयं को पहाड़ी ही कहते थे।"

“बचपन में वह गुरूकुल काँगड़ी में निःशुल्क पढ़े। सातवीं कक्षा में सख्त बीमार हो जाने के कारण इनकी माँ इन्हें लेकर लाहौर चली आयी। यशपाल डी०ए०वी० स्कूल में पढ़ने लगे और पुनः माँ के फीरोजपुर छावनी चले आने पर मनोहरलाल हाईस्कूल में। 2 यशपाल एक स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति थे। जब पिता की स्वतंत्र प्रकृति ने परिवार के प्रति अपनी उदासीनता दिखाई तब माँ ने यशपाल के पालन-पोषण का दायित्व अपने ऊपर ले लिया, और जीविकोपार्जन के लिए फिरोजपुर छावनी के एक अनाथालय में अध्यापन का कार्य करने लगीं।

यशपाल ने लिखा है- "माँ की तनख्वाह उस समय तीस रूपये मासिक थी। उन्हें कन्या पाठशाला में सुबह सात-आठ बजे पढ़ाने चला जाना पड़ता था। मैं और मेरा भाई दस बजे स्कूल जाते थे। मां हमलोगों के लिए और अपने लिये भी खाना बना कर रख जाती थीं। मेरा भाई धर्मपाल अभी बहुत छोटा था। मां स्कूल से थकी हुई लौटकर चौका - बरतन करें, यह मुझे अन्याय जँचता था इसलिये मैं स्कूल जाने से पहले चौका बरतन कर देता था। पानी प्रायः आधा फर्लांग से लाना होता था। मध्यम श्रेणी की मनोवृत्ति के कारण इज्जतदार घर की स्त्रियों का पानी भर कर लाना मैं उचित नहीं समझता था। पैसा नहीं था परंतु मैं स्वयं को इज्जतदार जरूर समझता था इसलिये पानी भी भरता था। " यशपाल साधनहीन वर्ग को कभी भी अपनी इच्छाओं का दमन करते हुए नहीं देखना चाहते थे। कारण कि इनका प्रारंभिक जीवन जिन कठिनाइयों में बीता था वह मानव स्तर पर घटित होने वाली साधारण बात थी। आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित माँ बेटे को भी इसका प्रचारक बनाना चाहती थीं। यशपाल ने लिखा है, -

" सात-आठ वर्ष की अवस्था में मेरी माता ने मुझे स्वामी दयानंद के आदर्श के अनुकूल आर्य धर्म का तेजस्वी और ब्रह्मचारी प्रचारक बना सकने की आशा से गुरूकुल काँगड़ी में भरती कर दिया था। बचपन में माता- पिता से दूर, आर्यसमाजी अध्यापकों के नियंत्रण में कई बरस तक कष्ट, संयम निबाहने की सुख- दुखपूर्ण कई बातें याद हैं; नंगे पाँव या खड़ाऊँ पहन कर चलना, काठ के तख्त पर सोना, सख्त सर्दी में सूर्योदय से पहले ठंडे पानी से नहाना और भोजन के बाद अपना लोटा - थाली स्वयं माँजना। इसके अलावा कभी कोई दूकान या स्त्री का मुख न देख पाना। सबसे उग्र समृति है, गुरूकुल के वातावरण में अंग्रेज तथा विदेश शासन से विरोधी भावना की। ..२ आर्यसमाजी वातावरण के प्रभाव से वैदिक धर्म में यशपाल जी की माता की अपार श्रद्धा थी और वे अपने दोनों बच्चों को भी आर्य सिद्धान्तों के अनुकूल ही शिक्षा दिलाना चाहती थीं। लेकिन यशपाल गुरूकुल के कठोर अनुशासन और वहाँ की दिनचर्या के समर्थक नहीं थे। उनके विचार से सभी विद्यार्थियों पर इसका विपरीत ही असर हुआ। चूंकि सभी प्रकार के आकर्षणों से वंचित रखे जाने के कारण प्रायः विद्यार्थियों में यौन संबंधी चेतना और असामाजिक मनोवृत्तियाँ उग्र रूप से जागृत हो ही जाती थीं। यशपाल ने लिखा है- "निरन्तर वर्जना के कारण ब्रह्मचारियों का कौतूहल यौन सम्बंधी विचारों की ओर और भी अधिक उग्र हो जाता था। उनमें अप्राकृतिक यौन चेष्टायें भी प्रकट होने लगती थीं। चूंकि इस प्रकार के विचार का आना यशपाल के लिए परिस्थितियों के अनुकूल ही था।

वे अन्तर्मन से आर्यसमाज को धन्यवाद कहते हैं- "कांगड़े से पंजाब में आ बसने वाले हमारे कुछ संबंधी यदि आर्यसमाज के प्रभाव में न आ गये होते और उनकी कृपा से मेरी माँ को अक्षर ज्ञान नसीब न हो गया होता तो मैं सम्भवतः काँगड़े के दूसरे गरीब खत्री नौजवानों की तरह पीठ पर गठड़ी में दुकान बांधे कुछ कारोबार करता या लाहौर, अमृतसर में बर्तन माँजने की ही नौकरी करता । यशपाल अपने प्रारंभिक जीवन में पग-पग पर मुसीबत से लोहा लिया था। उस जीवन की कल्पना करना भी असम्भव है जब एक कहानी लिखकर चार या पांच रूपये का पारिश्रमिक मिल जाता था। चूंकि क्रान्तिकारी मानसिकता के कारण ही - " आर्य समाज माँ के विचारों से प्रभावित यशपाल आर्य समाज के आन्दोलनों में भाग लेते थे। ... १९२१ ई० में मैट्रिक परीक्षा फर्स्ट डिवीजन में उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें वजीफा मिला, लेकिन असहयोग आन्दोलन के कारण इन्होंने सरकारी कॉलेज में भर्ती होने से इनकार कर दिया और फिरोजपुर जिले के देहात में कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन का प्रचार करने लगे। गाँधीजी द्वारा १९२१ ई० में चौरी-चौरा की घटना के फलस्वरूप असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिये जाने के कारण यशपाल निराश होकर लाहौर में स्वर्गीय लाला लाजपतराय द्वारा संस्थापित नेशनल कॉलेज में; सरकारी कॉलेज में भर्ती न होने की जिद्द के अनुरूप भर्ती हो गये, जहाँ यह भगत सिंह, सुखदेव, भगवतीचरण आदि से परिचित हुए। असहयोग आन्दोलन का स्थगित होने से ये सभी क्षुब्ध थे। विचार-विमर्श कर गाँधीवादी मार्ग की अपेक्षा इन लोगों ने क्रान्ति का मार्ग अपनाया, 'क्रान्तिकारी दल' और 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की। अतएव, क्रान्तिकारी तथा कठोर, क्रूर जीवन व्यतीत करने के कारण यशपाल के जीवन में एक स्वाभाविक कठोरता एवं व्यवस्था आ गयी थी। उनका जीवन पूर्ण नियमित रहा है, रूप, रंग पोशाक और व्यवहार से यशपाल साहित्यकार न लगकर पुलिस अधिकारी ही लगते हैं। अपने इसी रूप-रंग के कारण वे वायसराय इर्विन की गाड़ी को बम से उड़ाने के षड्यंत्र के समय पुलिस-कैप्टन के वेश में गये थे और पुलिस की आँखों में धूल झोंकने में समर्थ हुए थे। उपेन्द्रनाथ अश्क ने लिखा है- "हृष्ट-पुष्ट देह, लम्बे- लम्बे घुँघराले बाल, गहरी अनुभूति प्रवण आँखें, नंगे शरीर पर धोती और चादर। यही चित्र 'भग्नदूत' में छपा भी था। उसी के अनुरूप मैंने यशपाल की कल्पना की थी। हृष्ट-पुष्ट देह की बात न सही, लेकिन लम्बे बालों और कुछ बेपरवाही के भाव की आशा तो थी ही। मैंने देखा - बढ़िया सूट पहने हुए मॅझले कद और सॉवले रंग का एक युवक, सफाई से कटे-छटे बाल, चौड़े खुले - खुले अंग, मोटे होंठ, घनी भँवें और पिचके हुए कल्ले। किसी क्रान्तिकारी के बदले मुझे यशपाल एक बिगड़े हुए ईसाई युवक ऐसे लगे।"" डॉ० सुनील कुमार लवटे ने लिखा है- "यशपाल जी की इस देह गठन का सबसे प्रारंभिक विवरण प्राप्त है, जब उनकी उम्र २३ - २४ साल की थी। दिल्ली कॉन्स्पिरेसी केस के सिलसिले में अंग्रेजों ने यशपाल को पकड़ने के लिए ३००० रूपये का इनाम रखा था। और उसकी विज्ञप्ति जगह-जगह पर लगायी गयी थी। यह बात है सन् १९३० के नवम्बर की। विज्ञप्ति में यशपाल का विवरण देते हुए लिखा था, 'Age 23-24 Years, height5F, medium build, a boil mark on the left temple, the size of an eight anna piece, wears spectacles' (उम्र २३-२४ साल, कद पांच फुट, इकहरा बदन, दाहिनी कनपटी पर अठन्नी जितना दाग, ऐनक पहनता है।) - २ यशपाल का व्यक्तित्व के संबंध में मधुरेश के शब्दों में, जब ये उनसे मिलने के लिए इनके घर गये थे, "याद सिर्फ इतना है कि हमें ड्राइंग रूम में बैठा दिया गया था और अंदर कोई खबर करने गया था और यशपाल के अंदर से बाहर आने का वह समय, जो एक मिनट से अधिक तो हरगिज नहीं था, एक छोर से दूसरे छोर तक खिंचा हुआ लगा जिसमें जरा देर पहले तक यशपाल की चर्चा थी, कल्पना थी, अनुमान था शायद संभ्रम भी रहा हो और अब वह स्वयं थे।

हॉ स्वयं यशपाल...वास्तविक और पूरे... सफेद कुर्ता-पैजामा में, उतने ही सफेद रूखे बाल और मोटे शीशों का बहुत पहचाना हुआ-सा चश्मा और अब तो मुझे यह भी ख्याल नहीं कि इस कमरे में पहले वह खुद आए थे या कि उनकी आवाज : 'वाह साहब! हम तो सुबह से इन्तजार कर रहे हैं।... इस समय कौन- सी गाड़ी से आ रहे हैं? अरे आप तो सब भीग गए हैं.... बैठिए ... बैठिए...' और इस बीच मुझे एकदम याद नहीं रहा कि मुझे नमस्कार करना है, हाथ मिलाना है या कि पैर छूने हैं। "रे आचरण और व्यवहार के मामले में यशपाल जिंदादिल थे। चाहे मित्र हो, रिश्तेदार हो या कोई ड्राइवर, माली, टाइपिस्ट या कॉफी हाउस का बेयरा यशपाल सबके साथ हमदर्द के रूप में पेश आते थे। यशपालजी का लखनऊ जैसे महानगर में सभी स्तरों में मित्रों का फैलाव उनकी जनसंग्रहात्मक वृत्ति का ही परिचायक था। उनके किसी भी दोस्त से मिलिये, वह आपसे कहेगा कि वे मेरे जिगरी

थे। मैंने अपने लखनऊ निवासकाल में इसका अनुभव लिया है।" मधुरेश के शब्दों में- " यशपाल की चुहलबाजी और जिंदादिली घर में भी अपने छोट-बड़ों हर एक के साथ बनी रहती है। खाने पर तो वह खामोश नहीं ही बैठते हैं, वैसे भी किसी न किसी से कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। लगता है जैसे काम के बाद, काम के समय की खामोशी, स्वयं उन्हें ही अखरने लगती है और तब अपनी ओर से भरपूर वह उसे पूरा कर लेना चाहते हैं। यशपाल के व्यक्तित्व में शालीनता, सहानुभूति, संयम तथा साहस सभी का सामंजस्य था।

नरेश मेहता

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी के यशस्वी कवि श्री नरेश मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं। नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्त्व है, जो उन्हें प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं। आर्ष परम्परा और साहित्य को श्रीनरेश मेहता के काव्य में नयी दृष्टि मिली। साथ ही, प्रचलित साहित्यिक रुझानों से एक तरह की दूरी ने उनकी काव्य–शैली और संरचना को विशिष्टता दी।

श्री नरेश मेहता ने इन्दौर से प्रकाशित चौथा संसार हिन्दी दैनिक का सम्पादन भी कि

जीवन

नरेश मेहता का जन्म सन् १९२२ ई० में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में हुआ। बनारस विश्वविद्यालय से आपने एम०ए० किया। आपने आल इण्डिया रेडियो इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्य किया।

नरेश मेहता दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। सन् २००० ई० में मेहता जी का निधन हो गया। नरेश मेहता को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए 1992 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भाषा शैली

नरेश मेहता की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। शिल्प और अभिव्यंजना के स्तर पर उसमें ताजगी और नयापन है। उन्होंने सीधे, सरल बिम्बों का प्रयोग भी किया है। मेहता जी की भाषा विषयानुकूल, भावपूर्ण तथा प्रवाहमयी है। उनके काव्य में रूपक, मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। नवीन उपमानो के साथ-साथ परंपरागत और नवीन छंदों का प्रयोग मेहता जी ने किया है।

नरेश मेहता के उपन्यास साहित्य में राजनैतिक चेतना

साहित्य सदैव समाज का पथ प्रदर्शन करता रहा है। साहित्यकार ने समाज के सामने आदर्श एवं नैतिक मूल्यों का उद्घाटन किया है तथा देश और समाज को सुसांस्कृतिक चेतना प्रदान की है। प्राणी मात्र के मानस पटल पर राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ एवं व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। वह युगीन परिस्थितियों को साहित्य में व्यक्त करता है। साहित्य मानव जीवन एवं समाज की अभिवृतियों एवं अनुभूतियों का प्रतिरूप होता है। " भारत में राष्ट्रीय चेतना का आरंभ 1835 की मैकाले की शिक्षा नीति के साथ माना जाता है। मैकाले की शिक्षा नीति ने भारतवासियों को पाश्चात्य शिक्षा , संस्कृति और मूल्यों से परिचित करवाया। स्वतंत्रता , समानता और अभिव्यक्ति का खुलापन जन्म लेने लगा। अतः हमारा साहित्य भी राष्ट्रीय चिंतन से प्रभावित होने लगा। भारतेन्दु ने अपने लेखों तथा नाटकों के द्वारा राष्ट्रीय और राजनीतिक चेतना का प्रसार किया , तो महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें ' सरस्वती ' के माध्यम से नया आयाम प्रदान किया। "मुंशी प्रेमचन्द ने अपने ' रंगभूमि ' और ' कर्मभूमि ' जैसे उपन्यासों तथा कहानियों में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों को अपने पात्रों के मुख से उभारा। मैथिलीशरण गुप्त , बालकृष्ण शर्मा

'नवीन', सुभद्रा कुमारी, दिनकर, यशपाल, नरेश मेहता जैसे अनगिनत साहित्यकारों ने इस क्रम में महत्वपूर्ण कार्य किया है। साहित्यकार राजनीति से सर्वथा पृथक नहीं हो सकते।

आज व्यक्ति के जीवन में राजनीतिक प्रभाव बहुत अधिक बढ़ गया है। राजनीति व्यक्ति के क्रियाकलापों तथा उद्देश्यों की पूर्ति में विशेष योगदान देती है। समाज की उन्नति या अवनति में राजनीति की महत्वपूर्ण भूमिका है। मध्यवर्ग, जो समाज का एक अभिन्न अंग कहा जा सकता है कि वर्तमान संकटपूर्ण कारूणिक स्थिति तथा दर्दनाक परिणामों के लिए वर्तमान राजनीतिक स्थिति जिम्मेदार है। आज राजनीति विभिन्न विसंगतियों का समुच्चय बनकर रह गयी है। राजनीति ने मध्यवर्गीय समाज में प्रवेश करके विषाक्त बना डाला है। श्री नरेश मेहता के उपन्यासों में तत्कालीन भारतीय राजनीति, भ्रष्ट प्रशासन प्रणाली, ब्रिटिश राजनीति, राजनैतिक भ्रष्टाचार, नेतागण, आंदोलन तथा रिश्वतखोरी जैसी विसंगतियों का चित्रण किया है। जहां राजनीति के दलदल में फँसे मध्यवर्ग के वास्तविक स्वरूप को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। वहीं भारतीय जनता के आक्रोश और राष्ट्रीय चेतना को भी स्पष्ट किया है।

भारतीय समाज में राजनीति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है और मध्यवर्ग उसी समाज का एक हिस्सा है। समाज में व्याप्त राजनैतिक विचारधारा या घटना का प्रभाव मध्यवर्ग पर भी उतना ही होगा जितना अन्य वर्गो पर। भारत में राजनीति अंग्रेजी शासन की प्रतिक्रिया के रूप में प्रभावी हुई। अंग्रेजी शासन से त्रस्त जनता आंदोलन करने पर उतारू थी। अंग्रेजों की अत्याचार पूर्ण नीति के कारण विभिन्न आंदोलन, सभाएं, जुलुस, हड़तालें की जा रही थी। जो राष्ट्रीय भावना समाज में दिखाई दे रही थी उसे भारतीय कांग्रेस ने पल्लवित किया। अंग्रेजी शासन से मुक्ति की भावना। समाजवादी विचारों तथा क्रांतिकारी कार्यों ने भी स्वतंत्रता की भावना को विकसित करने में योग दिया। स्वतंत्रता की दौड़ में महत्वपूर्ण भूमिका मध्यवर्ग की रही। भारतीय मध्यवर्ग आरम्भ से ही अंग्रेज नीति का विरोधी रहा। फलस्वरूप सर्वाधिक शोषण और कुपोषण का शिकार भी मध्यवर्ग को ही होना पड़ा। तथापि मध्यवर्ग पीछे नहीं हटा। मध्यवर्गीय लोगों ने बढ़ - चढ़ कर गांधीजी के आंदोलनो में भाग लिया। जेल यात्रा, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, खादी प्रेम, जुलूस, कांग्रेस की सभाओं में जाना आदि कार्य प्रारंभ हो गये थे। मध्यवर्गीय स्त्रियों का भी घर की चार दीवारी लांघकर बाहर जाना, विभिन्न राजनीतिक कार्यों में भाग लेना आदि कितने ही कार्य मेहताजी ने अपने उपन्यासों में स्पष्ट किये है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध भारतीय जनता में उत्पन्न असंतोष को उपन्यास में देखा जा सकता है।

अंग्रेजी शासन का कठोर नियंत्रण क्रूर नीति का दृश्य मेहताजी के उपन्यास 'यह पथबन्धु था' में स्पष्ट दृष्टिगत होता है। भारतीय आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेज सरकार ने कठोर से कठोर कदम उठाये। ब्रिटिश साम्राज्य का लोगों में भय पैदा हो इसलिए पुलिस ने अपना रौब जमाना शुरू कर दिया था जहां भी जनसमूह एकत्रित दिखाई देता था वही पुलिस का अत्याचार प्रारंभ हो जाता था। पण्डित मदनमोहन मालवीय एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। " अभी भाषण चल ही रहा था कि पुलिस के दस्तों ने घुस कर लाठी चार्ज कर दिया। लोग भागने लगे। नारे यहाँ - वहाँ टुकड़ों में सुनाई देने लगे, जैसे चिड़िया उड़ रही हो। पुलिस की सीटियाँ चारों तरफ सुनाई देने लगी। पुलिस ने धरपकड़ शुरू कर दी। लोग पकड़ - पकड़ कर ट्रकों व लारियो पर लादे जाने लगे। " एकत्रित भारतीय समूह ब्रिटिश सरकार के लिए खतरनाक हो सकता है इस भय के कारण पुलिस एकत्रित समूह पर लाठी चार्ज करती।

स्वतंत्रता की भावना भारतीयों में बहुत अधिक मात्रा में दिखाई दे रही थी। अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह की भावना जाग्रत हो चुकी थी। " अनन्त जनसमूह बढ़ रहा था। दिशाहीन। असंख्य पैरों की आवाज घुटी - घुटी सी उठ रही थी। लाखों नर - नारी बच्चे - बूढ़े, स्कूली बच्चे, व्यापारी, ठेले वाले, ऐतिहासिक, अभिव्यक्ति की महान शक्ति जनता - धोती में, पाजामे में, कुरते में, कमीज में, नंगे सिर, दुपल्ली में, पान खाये सिगरेट पीते दम साधे, गुस्से में, मुटिठयाँ ताने बढ़ रही थी। कहाँ, किधर, कौन जानता था ? चैक की कोतवाली के सामने पुलिस की टुकडियाँ तैयार खड़ी थी। अनन्त सिरों के बीच राष्ट्रीय तिरंगा धीमे - धीमे चल रहा था। " राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध जनता में जाग रहा था परन्तु पुलिस का कठोर रूख उन्हें तोड़ने की कोशिश में लगा था।

" पुलिस की सीटियाँ जन समूह का गीत भरा कंठ। शोलों की तरह उठते हुए नारे नेतृत्वहीन ऐतिहासिक बल। दिशाहीन संगीत।भारत माता की जय !! और देखते ही देखते गिरफ्तारियाँ। लाठी चार्ज। भीड़। भाग दौड़। " पुलिस जैसे ही कोई जुलूस देखती तुरन्त चैकन्नी हो जाती और भयभीत होकर अपना दमनचक्र प्रारम्भ कर देती। अंग्रेजी प्रशासन का दमनचक्र इतना क्रूर था। " पूरा देश देखते ही देखते एक बड़ा सा कारागार बन गया। हजारों आदमी प्रतिदिन गिरफ्तार होने लगे।

जैसे - जैसे गिरफ्तारी होती , आंदोलन की ज्वाला वैसे ही वैसे अधिक फैलती जाती। इतना बड़ा ज्वार हो जाएगा इसकी किसी को कल्पना नहीं थी। गाँव - गाँव तक आंदोलन की चिनगारी फैल गयी थी। " भारतीय हर स्थिति में हर कीमत पर स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे। पूरे राष्ट्र में आजादी की जंग छिड़ चुकी थी। इसीलिए युवा वर्ग अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार था। " कोने - कोने से असंख्य नवयुवक अपने प्राणों को होम करने के लिए स्कूलों , कालेजो से बाहर निकल आये और ऐतिहासिक ज्वार में समर्पित हो गये। लगा कि जैसे देश मुक्त होने के लिए कटिबद्ध है। बड़े व्यापक पैमाने पर सरकारी इमारतों , चीजों को लूटा जाने लगा , जलाया जाने लगा। थाने , रेल , तार , डाक , पुल नष्ट किये जाने लगे। सन् 1942 का यह आंदोलन क्रांतिकारी हिंसा तथा कांग्रेसी अहिंसात्मक जनबल दोनों के एकीकरण का सम्मिलित स्वरूप था। " प्रभावस्वरूप अंग्रेज सत्ता काँप उठी थी। भारतीयों में अपने राष्ट्र के प्रति चेतना पूर्ण रूप से जाग्रत हो चुकी थी। मेहताजी के साहित्य में स्थान - स्थान पर भारतीय जनता में उत्पन्न आक्रोश दिखाई देता है। अंग्रेजी साम्राज्य के प्रभाव स्वरूप भारत में राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई। अंग्रेजी शासन की क्रूर और अत्याचारपूर्ण नीति ने समाज में जन चेतना जाग्रत कर दी। अंग्रेज सरकार ने अपने स्वार्थ के लिए जो परिस्थितियाँ उत्पन्न की जिससे राष्ट्रीय भावना स्वतः ही विकसित होती चली गई। अंग्रेजो की नौकरशाही , शिक्षित मध्यवर्ग तथा औद्योगिक प्रणाली आधुनिक संसाधनों का प्रचलन , नवीन अर्थव्यवस्था आदि के कारण भारतीय राष्ट्रीयता को मजबूती मिली।

शिक्षा के प्रसार के कारण जब मध्यवर्गीय शिक्षित लोगों ने देश की दयनीय दशा के कारणों पर विचार किया तो महसूस किया कि अंग्रेजी शासन उदारवादी न हो कर शोषणात्मक शासन हैं तो उन्होंने भारतीय जनता में राष्ट्रीय चेतना की भावना जगाई। चारों ओर अंग्रेजी शासन से मुक्ति प्राप्त करने की लालसा नजर आ रही थी। लोगों में अपने राष्ट्र के प्रति जो चेतना जाग्रत हुई थी उसी के परिणामस्वरूप भारत में विविध आंदोलन , सत्याग्रह आदि हुए। ' यह पथबन्धु था ' उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना का चित्रण किया गया है। ब्रिटिश प्रशासन ने जो नीति अपना रखी थी वह अत्याचारपूर्ण व क्रूरतम थी। आंदोलन प्रारंभ करने वाले नेताओं को गिरफ्तार करने के लिए उन्होनें विविध अभियान चला रखे थे। " एक पुलिस वाला कहने लगा कि शफीउल्ला क्रांतिकारी है इसी इन्दौर का है। और साहब। यह भी कि हम जानते हैं और बताते नहीं है इसलिए चैबीसों घण्टे पुलिस यहाँ तैनात रहती है। कि कौन आया , कौन गया। " अंग्रेजी प्रशासन को जिस पर भी शंका होती पुलिस उस कस्बे या शहर को घेर लेती।

फिर भी राष्ट्र प्रेम की भावना कम नहीं होती। स्वराज्य प्राप्ति का भाव जाग चुका था। गांधीजी ने आंदोलन प्रारंभ कर दिया था। गांधीजी ने सोच - विचार किया यदि जनता अंग्रेजों की विरोधी हो जाए , किसी भी प्रकार से सरकार का सहयोग न करे तो ब्रिटिश साम्राज्य की नींव गिर सकती है। अतः उन्होंने अगस्त 1920 को आंदोलन हेतु चुना। " केवल राजनीति के लिए राजनीति में उनका विश्वास नहीं था और ऐसे समय में तिलक का निधन हो गया था। देश की तत्कालीन स्थिति थी , उसमें असहयोग आंदोलन सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार स्वदेशी और चरखे के उपयोग के कार्यक्रम देश के सामने रखे गए। " ' उत्तरकथा द्वितीय खण्ड ' में असहयोग आंदोलन में महिलाओं के सहयोग एवं राष्ट्रीय चेतना को दर्शाया गया है। " गांधी जयन्ती के अवसर पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का निर्णय लिया गया। प्रभात फेरियाँ निकाली गई। जिनमें स्त्रियों ने भी बढ़ - चढ़ कर भाग लिया। गांधी जयन्ती के दिन सोचा तो यही था कि होली किसी महिला के हाथों ही जलवाई जाए क्योंकि विदेशी वस्त्र एवं वस्तुएँ जितनी महिलाओं के द्वारा एकत्रित हुई थी , उसके मुकाबले पुरुषों का योग कुछ कम था। "अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय जागृति की भावना महिलाओं में भी उसी स्तर पर विद्यमान थी जिस स्तर पर पुरुषों में।

अपने राष्ट्र के प्रति चेतना प्रत्येक मानस मन में जाग्रत हो चुकी थी। सभाएं , जुलूस , प्रभात फेरियाँ की जा रही थी। ' नदी यशस्वी है ' उपन्यास में प्रभात फेरी का चित्रण किया गया है। " तोरनांद काण्ड की बात समाप्त नहीं हुई थी कि कुछ दिनों बाद कस्बे में ' प्रभात फेरी ', सभा , शोक प्रस्ताव आदि बातों ने तहलका मचा दिया , उस दिन कस्बे में लोगों को खादी की सफेद टोपियाँ बांटी गयी। शाम को चैक में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सरदार भगतसिंह की फांसी पर रोष प्रकट किया गया तथा अंग्रेजों की भर्त्सना की गई। "भारतीय जन समुदाय एक होकर ब्रिटिश शासन के प्रति अपना रोष प्रकट कर रहा था। सम्पूर्ण जन समुदाय में राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड़ती दिखाई दे रही थी। सम्पूर्ण भारत में फेरी या जुलूस , वन्दे मातरम् , भारत माता की जय , गांधी बाबा की जय के नारे सुनाई दे रहे थे। " सबसे आगे पुस्तके साहब की पत्नी श्रीमती मालती बड़ा सा झण्डा लिए चल रही थी। स्त्रियों के पीछे विद्यार्थियों का झुण्ड था जिसका नेतृत्व कमल पुस्तके कर रही थी। उनके बाद मजदूरों का जत्था जिसमें राम सिंह सबसे आगे चल रहा था और सबसे पीछे प्रजामण्डल के कार्यकर्ता , वकील आदि थे और इसी में पुस्तकें साहब बिशनबाबू , श्रीधर आदि चल रहे थे। "स्पष्ट है कि राष्ट्रीय चेतना प्रत्येक वर्ग , प्रत्येक व्यक्ति के मन में दिखाई दे रही थी।

बीसवीं शताब्दी के आते - आते भारतीय राजनीति भी क्रमशः दो भागों में विभाजित होने लगी। मध्ययुग या सन् 1857 की तीर तलवार वाली राजाओं नवाबों की विफल राज्यक्रांति अब बम - पिस्तौल की क्रांतिकारिता में बदलने लगी थी। " सम्पूर्ण भारतीय जनता अब क्रांति के बल पर स्वराज्य प्राप्त करना चाहती थी। पूरे समाज में आक्रोश विद्रोह की भावना , राष्ट्र के प्रति चेतना , स्वराज्य की भावना जाग्रत हो रही थी। जन सामान्य में राष्ट्र के प्रति जाग्रत प्रेम और अनुराग के कारण ही स्वराज्य प्राप्ति की कामना उत्पन्न हुई। फलस्वरूप जनता हिंसा और अहिंसा दोनों ही माध्यमों से राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी। जन चेतना के कारण ही राष्ट्रीय आंदोलनों को सफलता प्राप्त हुई तथा जनता की पूर्णरूपेण भागीदारी राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट करती है।

साहित्यकार नरेश मेहता ने उपन्यासों में जिस समय का वर्णन किया है। तत्कालीन समाज देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था। उस समय भारतीय समाज राष्ट्रीय प्रेमानुराग एवं आत्मोसर्ग की भावना से भरा हुआ था। समाज में जो साहित्य लिखा जा रहा था वह भी राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत था। साहित्य , अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध चिंगारियाँ उगलने का कार्य कर रहा था। मेहता जी ने उपन्यासों में दिखाया है कि " छोटे - छोटे बच्चों से लेकर बड़े तक देशप्रेम के भाव से आप्लावित है। ' ' नदी यशस्वी है ' उपन्यास में स्वतंत्रता संघर्ष में युवा वर्ग का राष्ट्रीय प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय युवा वर्ग अपने भविष्य की चिंता छोड़कर स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद गये थे। स्वतंत्रता संघर्ष में स्कूल - कॉलेज के विद्यार्थियों ने बढ़ - चढ़ कर भाग लिया अंग्रेज सरकार को हर तरह से परेशान करने का कार्य युवा वर्ग कर रहा था। " तोरनांद का डाका इन्दौर , उज्जैन घाट के कॉलेजो में पढ़ने वाले बड़े घरों के लड़कों ने देश की आजादी के लिए बम्ब पिस्तौल बनाने के लिए डाला था। "अतः स्पष्ट है कि युवाओं में जो राष्ट्र के प्रति अनुराग , भक्ति , प्रेम जाग्रत हुआ उसी के कारण वे अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष हेतु प्रस्तुत हुए।

भारतीय राजनीति में गांधीजी के प्रवेश ने राष्ट्रीय संघर्ष को और अधिक प्रोत्साहन दिया। लोग गांधी के अहिंसावादी विचारों का समर्थन करने लगे। भारतीयों ने गांधीजी के मार्ग का अनुसरण किया। ' यह पथ बन्धु था ' में स्पष्ट किया गया है मदन मोहन मालवीय जी ने जनसभा को संबोधित किया। " देश की स्वतंत्रता अंग्रेजों के शासन आदि पर बोलते हुए बताया कि गांधी बाबा ने निःशस्त्र रहकर भी अंग्रेजों की चुनौती देने का यह जो नया रास्ता बनाया है वह है विदेशी माल का बहिष्कार। किस प्रकार जर्मन अपने देश का माल खरीदता है स्वयं अंग्रेज इंग्लैण्ड के माल के अलावा दूसरा माल नहीं खरीदता चाहे सस्ता ही क्यों न हो तब हम भारतीयों को भी चाहिए कि अपने ही देश का माल खरीदे। सबसे ज्यादा जो माल बाहर से आता है वह है कपड़ा। विदेशी कपड़े का व्यवहार करना छोड़ देना चाहिए देश का कपड़ा पहनने से देष के कारीगरों को रोजी - रोटी मिलेगी देश का पैसा देश में ही रहेगा ऐसी स्थिति में हमारी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। "अतः विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर , स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर राष्ट्र प्रेम अभिव्यक्त किया गया है।

उपसंहार

आधुनिक युग के प्रमुख साहित्यकारों में यशपाल अपनी स्वतंत्र चेतना और द्वन्द्वात्मक विचारधारा को लेकर हिन्दी साहित्य में आये। वे अपने जीवन के भीषण संकट रूपी चक्रव्यूह को भेदकर हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान किए। युगीन परिस्थितियों की वजह से उनके साहित्य में विविध प्रवृत्तियाँ उभरती और मिटती रही हैं। यशपाल का साहित्य आधुनिक समाज की मौलिक समस्याओं को विशेष रूप से उठाता है। चूंकि साहित्य और समाज का अन्तःसंबंध है इसलिए समाज में जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से घटित होता है उसका सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। वर्तमान शासन व्यवस्था और राजनैतिक परिवेश को लेकर उपन्यासों में सर्जना होती रही है। श्रीनरेश मेहता ने उपन्यासों में तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों का यथार्थ चित्रण किया है। मेहता जी के उपन्यास स्वतंत्रता से पूर्व पीठिका पर आधृत है। देश स्वतंत्रता प्राप्ति की पुरजोर कोशिश में संघर्षरत था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विविध नीतियों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए मध्यवर्ग की इस संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका रहीं। समाज में फैले भ्रष्टाचार , शासन की स्वार्थपरता तथा शोषण को देखकर लोगों में चेतना जाग्रत हुई। जहां एक ओर स्वतंत्रता प्राप्ति की ज्वाला सुलग रही थी वहीं दूसरी ओर भारतीय राजनेताओं की स्वार्थी प्रवृति जनता में असंतोष पैदा कर रही है। स्वार्थवश राजनेता एवं ब्रिटिश प्रशासनिक कर्मचारी समाज में साम्प्रदायिकता का विष घोल रहे थे। ऐसे में मध्यवर्ग इन सब से रूष्ट होकर समाज में क्रांति का अग्रदूत बनकर सामने आया। राजनैतिक कार्यों , गतिविधियों में भाग लेने वालों में सर्वाधिक संख्या मध्यवर्ग की रही। मध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से मेहता जी ने समाज के समक्ष आदर्श स्थापित किये। जिन्होंने जनचेतना में महती भूमिका निभायी।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव, बीना, 'हिन्दी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', प्रथम संस्करण : १९८१. मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।
2. श्रीवास्तव, परमानंद (डॉ०), 'हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया', प्रयुक्त संस्करण : फरवरी १९६५, ग्रन्थम, कानपुर।
3. श्रीवास्तव, जगदीशनारायण, 'उपन्यास की शर्त', प्रथम संस्करण : १९९३, किताबघर, नई दिल्ली |
4. श्री व्यथितहृदय, 'स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी (भाग - १), प्रथम संस्करण : १९८६, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. श्री सम्पूर्णानंद (पूर्व मुख्यमंत्री, उ० प्र०), 'समाजवाद', प्रयुक्त संस्करण - पंचम आवृत्ति: संवत् २००४ श्री काशी विद्यापीठ, बनारस |
6. अवस्थी, डॉ० देवीशंकर (सं०), 'नयी कहानी: सन्दर्भ और प्रकृति, प्रथम संस्करण : १९७३, प्रयुक्त संस्करण : १९९३, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली।
7. अग्रवाल, विपिनकुमार (डॉ०), 'आधुनिकता के पहलू, प्रथम संस्करण: अप्रैल, १९७२, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
8. अग्रवाल, भारतभूषण, 'हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव' प्रयुक्त संस्करण : २००१, किताबघर, नयी दिल्ली ।
9. कविता भट्ट , उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग , क्लासिक पब्लिकेशन , जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या 136
10. यह पथबन्धु था , नरेश मेहता , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 429
11. वही , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 429
12. वही , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 430
13. उत्तरकथा भाग - 2, लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 237
14. कविता भट्ट , अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग , क्लासिक पब्लिकशन , जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या 13